कोविड-19 महामारी के दौरान ऑनलाइन माध्यम से प्रारंभिक स्तर की कक्षाओं हेतु अकादमिक प्रयासों का अध्ययन

अशोक कुमार नेगी*

वैश्विक महामारी कोविड-19 के प्रभाव से भारत में 22 मार्च, 2020 से स्कूल आंशिक रूप से बंद हैं। इस समयावधि में हमारे विद्यालय अनेक कठिनाइयों से जूझ रहे हैं, मूलत: अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया मुख्यधारा से विलग हो रही है। इस शोध पत्र में कोविड-19 महामारी के दौरान विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न आयामों से संबंधित अध्ययन के परिणामों को प्रस्तुत किया गया है। जिसमें विद्यालयी शिक्षा की वस्तुस्थिति, ऑनलाइन माध्यम का महत्व, अकादमिक गतिविधियों के संचालन के आयाम, अकादमिक गतिविधियों में विद्यार्थियों की सहभागिता तथा इस माध्यम से होने वाली शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया की विशेषताएँ और कठिनाइयाँ शामिल हैं। इस हेतु शोधार्थी द्वारा यादृच्छिक न्यादर्श विधि से खंडवा ज़िले के ग्रामीण क्षेत्र के प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त कर रहे 25 बच्चों, अध्यापकों तथा अभिभावकों से दूरभाष पर एवं फ़ील्ड में जाकर स्वनिर्मित उपकरण के माध्यम से प्रदत्त संकलित किए गए। इस अध्ययन में पाया गया कि कोरोना संक्रमण के कारण परिवहन व्यवस्था बंद होने से दूरस्थ अंचल, वन ग्राम व ग्रामीण क्षेत्रों में बच्चों की अकादमिक गतिविधियाँ नगण्य हो गईं। वर्तमान में शिक्षा के ऑनलाइन माध्यम के महत्व को नकारा नहीं जा सकता। कक्षा पहली एवं दूसरी के बच्चों के लेखन कौशल की गतिविधियाँ चिंताजनक हैं। इसी तरह की स्थिति प्राथमिक कक्षाओं में भाषाई कौशलों, भाषा ज्ञान तथा गणित की मूलभूत दक्षताओं के विकास में भी निर्मित हो रही है, जो भविष्य के लिए चिंताजनक है।

आज कोविड-19 महामारी ने बच्चों की खुशहाल और आनंद से भरी ज़िंदगी में उथल-पुथल मचा दी है। कोविड-19 संक्रमण की वजह से बच्चों का जीवन पूरी तरह बदल गया है। स्कूल बंद होने के कारण बच्चों की नियमित शिक्षा प्रभावित हुई है, बच्चे पढ़ाई कैसे करें? इस हेतु मध्य प्रदेश में शिक्षा विभाग के निर्देशानुसार राज्य शिक्षा केंद्र, भोपाल, समस्त सरकारी और अनेक गैर-सरकारी संगठनों द्वारा अपने-अपने स्तर पर सभी बच्चों के लिए विभिन्न अकादमिक गतिविधियाँ विकसित कर रहा है। साथ ही, ऑनलाइन माध्यम से शिक्षा प्रदान करने हेतु अनेक प्रयास किए जा रहे हैं। ताकि शिक्षा के क्षेत्र में होने वाली विभिन्न गतिविधियों द्वारा समस्त विद्यार्थी स्वयं को पढ़ाई-लिखाई से जोड़ सकें। इन

* *व्याख्याता*, ज़िला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, खंडवा, मध्य प्रदेश 450 001

प्रयासों का बच्चों पर प्रभाव भी देखा जा रहा है। यह शोध पत्र ऑनलाइन माध्यम से बच्चों की शिक्षा हेतु हो रहे प्रयासों की ओर ध्यान दिलाता है।

कोरोना महामारी की प्रारंभिक लहर में महानगरों या शहर के लोग इसके संक्रमण से ग्रसित होकर अनेक तरह की पाबंदियों के साथ जीवनयापन कर रहे थे। यह संक्रमण ग्रामीण क्षेत्रों तक नहीं फैला था। परंतु दूसरी लहर में यह संक्रमण गाँव और वन अंचल, शहर और महानगर, सभी क्षेत्रों में फैल गया। सभी क्षेत्र इस वायरस का दंश झेल रहे हैं। जो प्रकृति के बीच बसे अंचल सुखी और आनन्दित जीवनयापन कर रहे थे, उनमें भी अब संक्रमण का भय व्याप्त हो गया है। आज हमारे देश में चिकित्सा विशेषज्ञों द्वारा कोरोना की तीसरी लहर के आने की संभावना भी व्यक्त की जा रही है जिसमें बच्चों के स्वास्थ्य एवं सुरक्षा को लेकर समस्त व्यवस्थाओं की तैयारी ज़ोरों पर है। बहरहाल, विश्व के साथ हमारे देश में भी, इस दौर में विद्यालयी बच्चों के लिए विभिन्न अकादमिक गतिविधियाँ एवं कौशल विकसित करने के मार्ग में अनेक समस्याएँ खड़ी हैं। इसलिए इन समस्याओं का शत-प्रतिशत निदान किया जाना अत्यंत आवश्यक हो गया है।

सर्वप्रथम अध्ययनरत विद्यार्थियों को शैक्षिक कार्यक्रमों द्वारा शिक्षा की धारा से जोड़े रखना बहुत ज़रूरी है। बच्चों का शैक्षिक गतिविधियों से निरंतर जुड़ाव रखने के लिए शिक्षा के समस्त हितधारकों, अभिभावकों एवं अध्यापकों को कोविड-19 सुरक्षा के निर्देशों, सावधानियों एवं सुझावों के अनुसार इन सभी से मोबाइल फ़ोन, व्यक्तिगत संपर्क आदि के माध्यम से संपर्क में रहना, अत्यंत आवश्यक है। जिससे इस महामारी काल में अकादमिक गतिविधियों का संचालन निरंतर एवं नियमित हो सके और बच्चे अकादमिक स्तर उन्नयन में न पिछड़ें। चूँकि, शैक्षणिक संस्थान और विद्यालय आज भी नियमित रूप से नहीं खुल पा रहे हैं। ऐसी स्थिति में बच्चों की पढ़ाई-लिखाई के लिए ऑनलाइन माध्यम को विकल्प के रूप में अपनाया जा रहा है।

ऑनलाइन माध्यम

यह एक ऐसा माध्यम है, जिसके द्वारा एक या एक से अधिक डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म पर इंटरनेट की सहायता से शिक्षा प्रदान की जाती है, इससे न केवल पढ़ाई, अपितु असाइनमेंट, प्रश्नोत्तरी, विभिन्न टेस्ट व परीक्षाएँ भी अलग-अलग एप्लिकेशन, ज़ूम, गूगल मीट, वेबेक्स इत्यादि माध्यमों द्वारा संचालित की जा रही हैं। मोबाइल, लैपटॉप, कंप्यूटर आदि के माध्यम से घर पर ही अपनी पाठ्य सामग्री का अध्ययन कर सीखना ऑनलाइन शिक्षण-अधिगम कहलाता है। इसमें ऑनलाइन ही पुस्तकों, नोट्स, ऑडियो-वीडियो, पी.पी.टी., वर्कशीट आदि का उपयोग करके अध्यापक द्वारा पढ़ाया जाता है।

ऑनलाइन सामग्री के कई ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म उपलब्ध हैं। ऑनलाइन शिक्षा में इंटरनेट सुविधा का होना ज़रूरी है, क्योंकि इसके बिना ऑनलाइन शिक्षा नहीं दी जा सकती है। विद्यार्थियों एवं अध्यापकों के लिए ऑनलाइन शिक्षा सिर्फ़ टेक्नोलॉजी नहीं है, बल्कि अपने आप में विषय-वस्तु भी है। आज ज्ञान के निर्माण के साथ-साथ ज्ञान सामग्री का वितरण भी आवश्यक है। अत: अध्यापकों से अपेक्षा की जाती है कि वे इन सामग्रियों की पहचान कर बच्चों को उपलब्ध कराएँ।

अल्बेरिनी (2006) के अनुसार, टेक्नालॉजी का शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उपयोग करना, अध्यापक के टेक्नालॉजी के प्रति नज़रिए पर निर्भर करता है।

क्लूवर, लाम, हॉफ़मैन, ग्रीन और स्वेरनजिस (1994) के अनुसार, कक्षा में टेक्नालॉजी का सफलतापूर्वक उपयोग इस बात पर निर्भर करता है कि टेक्नोलॉजी टूल्स के प्रति अध्यापक का दृष्टिकोण कैसा है।

ऑनलाइन माध्यम और अकादमिक गतिविधियाँ

मध्य प्रदेश राज्य शिक्षा केंद्र, भोपाल के निर्देशानुसार कोविड-19 के दौरान बच्चों को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़े रखने के लिए प्रारंभिक शिक्षा (कक्षा 1 से 8) हेतु अकादमिक गतिविधियों के अनेक प्रयास किए जा रहे हैं। इनमें निम्नलिखित प्रमुख हैं, जो इस प्रकार हैं—

- दक्षता समूहों का निर्माण— प्राथमिक विद्यालय (कक्षा 3–5) में अकादमिक सत्र (2019–20) अनुसार दो समूह अंकुर एवं तरुण तथा माध्यमिक विद्यालय (कक्षा 6–8) में अकादमिक सत्र (2019–20) के अनुसार तीन समूह अंकुर, तरुण एवं उमंग बनाए गए। इन समूहों का गठन सत्र की शुरुआत में बच्चों के बेसलाइन टेस्ट के परिणामों के आधार पर निर्धारित किया गया।
- व्हाट्सएप समूह निर्माण— अध्यापकों द्वारा अपने स्कूल के व्हाट्सएप समूह का निर्माण एवं सभी विद्यार्थियों हेतु मेंटर की पहचान।
- व्हाट्सएप समूह निर्माण— अध्यापकों द्वारा अपनी कक्षा के विद्यार्थियों हेतु व्हाट्सएप समूह का निर्माण किया गया।
- डीजीलेप (DigiLEP) के अंतर्गत की जा रही गतिविधियाँ संचालित की गईं।
- रेडियो कार्यक्रम प्रसारण के अंतर्गत की जा रही गतिविधियाँ की गईं।
- विद्यार्थियों से वर्कबुक (अभ्यास पुस्तिका) पर कार्य करवाना एवं उसकी जाँच कर उन्हें फ़ीडबैक दिया गया।
- हमारा घर, हमारा विद्यालय या मोहल्ला कक्षा का आयोजन (प्रातः10 बजे से दोपहर 1 बजे तक) किया गया।
- गृहकार्य या कक्षाकार्य—अवलोकन या प्रोजेक्ट वर्क अथवा हिंदी-अंग्रेज़ी पाठ, एक पृष्ठ या पैराग्राफ़ की नकल प्रतिदिन कराई गई।
- व्हाट्सएप आधारित आकलन के अंतर्गत विद्यार्थियों की स्थिति का प्रति सप्ताह अवलोकन (हिंदी एवं गणित विषय) में किया गया।
- विद्यार्थियों एवं अभिभावकों से मोबाइल पर प्रतिदिन चर्चा या संपर्क कर अकादमिक गतिविधियों पर बातचीत करना (संबंधित अध्यापकों द्वारा पाँच अभिभावकों से मोबाइल पर प्रतिदिन संपर्क) किया गया।
- बच्चों की अकादमिक प्रगति का अवलोकन करने के लिए ट्रैकर शीट का प्रयोग किया गया।
- निष्ठा प्रशिक्षण में मोबाइल ऐप से सहभागिता की गई।
- फ़ीडबैक एवं समर्थन फ़ॉर्म भरे गए तथा इनकी यादृच्छिक रूप से रेंडमली क्रॉस चेकिंग या ऑनलाइन मॉनिटरिंग की गई।
- शैक्षिक संवाद का आयोजन किया गया, जिसमें सभी हितधारकों को अकादमिक मार्गदर्शन प्रदान किया गया।

- कक्षा 1 व 2 की अध्ययन गतिविधियों के लिए अध्यापकों द्वारा पालकों के सहयोग से अतिरिक्त प्रयास किए गए।

हमारा घर, हमारा विद्यालय 6 जुलाई, 2020 से प्रारंभ हुआ। इसके अंतर्गत अनेक अध्यापकों द्वारा नियमित रूप से अध्यापक डायरी बनाई गई। जिसमें विद्यालय का नाम, अपना नाम, यूनिकोड, दिनांक कार्यवाही, विवरण, विषय, बच्चों के नाम जिनके संपर्क लिए गए, कक्षा, मोबाइल नंबर, चर्चा के बिंदु, विशेष गृह संपर्क इत्यादि करते हुए अपनी नियमित अकादमिक गतिविधियों को अभिलेखित किया गया।

ऑनलाइन मॉनिटरिंग

अकादमिक गतिविधियों की ऑनलाइन मॉनिटरिंग यादृच्छिक रूप से आवंटित विद्यालयों के जनअध्यापक, विकासखंड अकादमिक समन्वयक, ज़िला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के अकादमिक सदस्यों द्वारा निर्देशानुसार नियत दिवस पर दिए गए मोबाइल ऐप के माध्यम से अपलोड की गई।

आयुक्त लोकशिक्षण एवं राज्य शिक्षा केंद्र, भोपाल द्वारा जारी निर्देश

(1 अप्रैल से 15 अप्रैल हेतु निर्देशिका के अनुसार)

- कक्षा पहली से आठवीं तक बच्चों का आकलन, उन्हें दिए गए प्रोजेक्ट कार्य के आधार पर किया जाए।
- व्हाट्सएप समूह पर 9–10 बजे सुबह सामग्री भेजना, दिन भर कभी भी बच्चे अपनी सुविधानुसार सामग्री का अवलोकन करें एवं अगले दिन अध्यापक द्वारा उसका आकलन करना। इस सामग्री में सृजनात्मक गतिविधियाँ हैं, जिन्हें बच्चे पढ़ कर छोटी-छोटी गतिविधियाँ कर पाएँगे।
- रेडियो स्कूल कार्यक्रम— इसका प्रातः 10 से 11 बजे एवं शाम को 5 से 5:30 बजे तक नियमित प्रसारण किया जाए।
- अभिभावकों से निवेदन— कक्षा 1 व 2 के लिए पाठ्यपुस्तक आधारित कार्यक्रम है तथा कक्षा 3 से 8 के लिए दक्षता उन्नयन कार्यक्रम व ज्वॉयफुल लर्निंग की गतिविधियाँ हैं, जो बच्चे आनंदपूर्वक कर सकेंगे।
- क्लासरूम कार्यक्रम— दूरदर्शन पर क्लासरूम कार्यक्रम का प्रसारण कक्षा 6 से 8 के लिए दोपहर 12 से 1:30 बजे तक गणित, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान विषय की कक्षाओं के लिए।
- जीवन कौशल कार्यक्रम उमंग— रविवार को जीवन कौशल कार्यक्रम उमंग सभी बच्चों के लिए प्रसारित किया जाता है।
- बच्चों को संदेश— घर पर रहें, सुरक्षित रहें।
- राज्यस्तरीय अध्यापक सम्मान समारोह— 6 अप्रैल, 2021 को अध्यापकों के उत्कृष्ट कार्य को प्रोत्साहन देने के लिए वर्चुअल माध्यम से राज्यस्तरीय अध्यापक सम्मान समारोह भी रखा गया था।

ऑनलाइन माध्यम से अकादमिक गतिविधियों के संचालन के लाभ

- समय और स्थान की बाध्यता नहीं, अपनी सुविधानुसार शिक्षण-अधिगम करना।
- प्रभावशाली शिक्षण के लिए अध्यापन के पूर्व पाठ को पूर्ण विधिवत तैयार कर प्रभावशाली बनाया जा सकता है।
- सामान्य स्थिति में सभी के लिए वहन करने योग्य; वर्क फ्रॉम होम से परिवहन खर्च की बचत होती है।
- पेपरलेस गतिविधियों को बढ़ावा पर्यावरण के लिए लाभदायक है।

- भविष्य की विद्यालयी एवं प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में सहायक।
- पढ़ाए जा रहे पाठों को रिकॉर्ड करने की सुविधा एवं उनका पुनः उपयोग, विश्लेषण, शिक्षण में सुधार की सुविधा।
- ऑनलाइन शिक्षा से समय और धन की बचत होती है।

ऑनलाइन माध्यम से अकादमिक गतिविधियों के संचालन में समस्याएँ

- ऑनलाइन माध्यम का उपयोग करने के लिए अध्यापकों का प्रशिक्षित न होना या प्रशिक्षण में कमी होना।
- नगरीय और ग्रामीण, आदिवासी क्षेत्रों के अनेक विद्यालयों में तकनीकी बाधाएँ और शिक्षण संस्थाओं में उपयुक्त आवश्यक भौतिक संसाधन, कक्षों की कमी।
- इंटरनेट कनेक्शन की कमी या न होना।
- निम्न एवं मध्यमवर्गीय परिवारों के लिए खर्चीला माध्यम होना।
- सोशल मीडिया के प्रति व्याकुलता।
- स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ, लगातार मोबाइल स्क्रीन देखने, अधिक समय तक ऑनलाइन जुड़ने, एक ही स्थान पर लगातार बैठने से स्वास्थ्य, आँखों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ने की समस्या।
- सामाजिक जुड़ाव से विलग होना, अध्यापक और विद्यार्थियों के बीच भावात्मक जुड़ाव न हो पाना।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

- वर्तमान कोविड-19 काल में विद्यालयी शिक्षा की वस्तुस्थिति से अवगत होना।
- वर्तमान कोविड-19 काल में ऑनलाइन माध्यम के महत्व को जानना।
- ऑनलाइन माध्यम से अकादमिक गतिविधियों के संचालन की वस्तुस्थिति से अवगत होना।
- ऑनलाइन माध्यम से अकादमिक गतिविधियों में विद्यार्थी की सहभागिता ज्ञात करना।
- ऑनलाइन माध्यम से अकादमिक गतिविधियों के संचालन में आ रही कठिनाइयों का अध्ययन करना व उपयुक्त सुझाव देना।

शोध प्रविधि

यह शोध अध्ययन खंडवा ज़िले में संचालित कक्षा 3 से 8 तक पढ़ाई कर रहे बच्चों से वर्तमान कोविड-19 काल को देखते हुए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग कर दूरभाष द्वारा किया गया। शोध अध्ययन हेतु कक्षा 3 से 8 तक के कुल 25 बच्चों का यादृच्छिक रूप से चयन किया गया।

शोध अध्ययन में खंडवा ज़िले के ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित हिंदी माध्यम के शासकीय विद्यालयों को लिया गया था। इस क्रियात्मक शोध अध्ययन के लिए प्रदत्त संकलन हेतु स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया था जिसके आधार पर बच्चों से दूरभाष पर चर्चा की गई। वर्तमान कोविड-19 काल में ऑनलाइन माध्यम से अकादमिक गतिविधियों संबंधी समाचारों, इंटरनेट सामग्री, अवलोकन, अभिमत आदि से भी जानकारी लेकर विश्लेषण किया गया।

मुख्य संप्राप्तियाँ

दूरभाष चर्चा से प्राप्त बच्चों का अभिमत

- प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त कर रहे ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों का अभिमत है कि किसी भी बच्चे के पास स्वयं के उपयोग हेतु एंड्राइड मोबाइल फ़ोन नहीं है। वे पालकों के मोबाइल फ़ोन का उपयोग करते हैं।
- वहीं 88 प्रतिशत बच्चों का अभिमत है कि उन्हें लॉकडाउन से पहले घर का एंड्राइड मोबाइल

चलाना नहीं आता था। उन सभी बच्चों को एंड्राइड मोबाइल फ़ोन चलाकर या देखकर अच्छा लग रहा है।

- सभी बच्चों को इस तरह मोबाइल फ़ोन से पढ़ने की अपेक्षा स्कूल में पढ़ना ज़्यादा अच्छा लगता है।
- उन्हें घर से पढ़ाई के लिए मोबाइल फ़ोन पर्याप्त समय के लिए नहीं मिल पाता है।
- शत-प्रतिशत बच्चों का अभिमत है कि पढ़ाई के लिए मोबाइल फ़ोन लगातार देखने से आँख, सिर, हाथ, एक ही जगह बैठने पर दर्द होता है, कठिनाई होती है।
- सभी बच्चों का अभिमत है कि किसी भी विषय में कठिनाई होती है तो अगले संपर्क दिवस पर व्हाट्सएप पर अपने अध्यापक से उसका समाधान करते हैं।
- शत-प्रतिशत बच्चों का अभिमत है कि मोबाइल फ़ोन से अध्ययन करने के लिए उनके घर पर पढ़ने का कमरा या शांत एवं उचित स्थान नहीं है। बच्चों का कहना है कि वे आँगन, खलिहान, बरामदे में पढ़ाई-लिखाई करते हैं।
- बच्चों के अभिमतानुसार मात्र 20 प्रतिशत ही रेडियो के शैक्षिक कार्यक्रम नियमित सुनते हैं। कुछ अध्यापकों ने स्वयं के प्रयास से रेडियो क्रय कर बच्चों के लिए ज़रूरतमंद पालकों को वितरित किए।
- बच्चों के अभिमतानुसार मात्र 30 प्रतिशत बच्चे ही टी.वी. के शैक्षिक कार्यक्रम नियमित देखते हैं।
- साठ प्रतिशत बच्चों का अभिमत है कि ग्रामीण क्षेत्र में ऑनलाइन अध्ययन सामग्री के लिए इंटरनेट कनेक्ट हो जाता है। कभी-कभी देर से इंटरनेट नेटवर्क मिलता है या फिर इंटरनेट नेटवर्क के लिए उचित स्थान पर जाना पड़ता है।
- सभी बच्चों का अभिमत है कि इंटरनेट डेटा पैक पर खर्च अतिरिक्त आर्थिक बोझ है। जिसके कारण नियमित इंटरनेट डेटा पैक रिचार्ज नहीं कर पा रहे हैं।
- सभी बच्चों का अभिमत है कि स्कूल की और दूसरी गतिविधियाँ (खेल-कूद, लेखन, चित्रकला प्रदर्शनी, भाषण, दोस्तों के साथ खेलना इत्यादि) रुक गई हैं।
- शत-प्रतिशत बच्चों ने बताया कि ऑनलाइन शिक्षा में जुड़ने से बच्चों का मिलना-जुलना, बातचीत करना, एक-दूसरे से हँसी-मज़ाक, परेशानियों को साझा करना इत्यादि गतिविधियाँ रुक जाने से उनका सामाजिक विकास अवरुद्ध हो रहा है। उन्हें एकाकीपन, एकरसता, चिढ़चिढ़ापन, गुमसुम होना, भविष्य के प्रति एक अनजान परिणाम से भयग्रस्त होना जैसी अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

वर्तमान कोविड-19 काल में ऑनलाइन माध्यम से अकादमिक गतिविधियों संबंधी बच्चों के अवलोकन के अभिमत

- बयानवें प्रतिशत बच्चे विद्यालय में नियमित कक्षाओं को बेहतर मानते हैं।
- इकतालीस प्रतिशत बच्चों को समझने में कठिनाई, 30 प्रतिशत बच्चों को ऊबाऊपन एवं 41 प्रतिशत बच्चों ने बताया की हम प्रश्न नहीं पूछ पाते हैं।
- बावन प्रतिशत बच्चों ने अपने दोस्तों को, 30 प्रतिशत ने खेलकूद, छह प्रतिशत ने पुस्तकालय कालखंड एवं 30 प्रतिशत बच्चों ने वार्षिकोत्सव के छूटने का दु:ख जताया।

अध्यापकों का अभिमत

- सतानवें प्रतिशत अध्यापक मानते हैं कि विद्यालय में होने वाली पढ़ाई से ऑनलाइन पढ़ाई में आत्मविश्वास ज़्यादा दिखाई दिया।
- चालीस प्रतिशत अध्यापक मानते हैं कि ऑनलाइन पढ़ाई के दौरान वास्तविक कक्षा जैसा वातावरण नहीं लगा।
- पंद्रह प्रतिशत अध्यापकों का अभिमत है कि ऑनलाइन पढ़ाई के दौरान सही मूल्यांकन नहीं हो पाया।
- चालीस प्रतिशत अध्यापक मानते हैं कि ऑनलाइन पढ़ाई के दौरान प्रैक्टिकल समझाने में परेशानी हुई।
- पच्चीस प्रतिशत अध्यापकों का अभिमत है कि ऑनलाइन पढ़ाई के दौरान तकनीकी समस्या से जूझना पड़ा।
- ऑनलाइन कक्षाओं से सबसे बड़ा नुकसान यह है कि हम ऑनलाइन पढ़ाई हेतु बच्चों को मोबाइल, लैपटॉप, कंप्यूटर जैसी सुविधा उपलब्ध करा रहे हैं। लेकिन बच्चे क्या उससे सही शिक्षा ले रहे हैं? इन बातों से वो अनजान रहते हैं। बच्चे पढ़ाई के अतिरिक्त उसमें गेम खेलने लगते हैं या अन्य सामग्री देखने लगते हैं, जो कि उनके लिए घातक है।
- अधिकतर अध्यापकों ने बताया कि राज्य शिक्षा केंद्र, भोपाल, मध्य प्रदेश शासन स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा विद्यार्थियों की अकादमिक गतिविधियों का संचालन ऑनलाइन और व्हाट्सएप आधारित समूह में सामग्री या लिंक्स साझा किया गया।
- अध्यापकों का अभिमत था कि इस दौरान बच्चों का स्कूल न लगने, पढ़ाई नियमित न होने एवं अधिकांशतः पाठ्यक्रम की विषय-वस्तु में पूरी तरह से समझ बनने में अनेक कठिनाइयाँ आ रही हैं। परंतु सभी अध्यापक अपने अनुभव और साझा-समझ से इन समस्याओं का समाधान निकाल रहे हैं, जैसे— कक्षा पहली में प्रवेशित बच्चों का गिनती के चार्ट, भाषा ज्ञान हेतु अक्षर-वर्णमाला का वितरण करना एवं अगली कक्षा में उन्नत किए गए बच्चों से प्रत्यक्ष संपर्क कर पालकों के माध्यम से शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया की समझ विकसित करना।
- अध्यापकों ने बताया कि कठिन विषय-वस्तु की अवधारणात्मक समझ के लिए हमें नियमित कक्षा-कक्ष जैसे ब्लैकबोर्ड की ज़रूरत होती है। वह ऑनलाइन या ओटला या मोहल्ला कक्षाओं के माध्यम से हितधारकों की सहभागिता से उपलब्ध कराई गई।

अभिभावकों की पहल

ग्राम, मालगांव एवं जोगिबेड़ा (खालवा); ग्राम, मिनावा माल (किल्लोद); ग्राम, घाटाखेडी (पंधाना) एवं ग्राम, टीठीया जोशी (खंडवा), धनगाँव आदि ग्रामों के पालकों ने अध्यापकों का सहयोग करते हुए उनके घर के आँगन में या मोहल्ला स्कूल में संचालित की गई।

अभिभावकों का अभिमत

- तिरानवे प्रतिशत पालकों का अभिमत है कि वे ऑनलाइन कक्षाओं के मुकाबले विद्यालय की वास्तविक पढ़ाई को बेहतर मानते हैं।
- चालीस प्रतिशत पालक मानते हैं कि ऑनलाइन पढ़ाई के दौरान बच्चे को समझने में कठिनाई हुई।
- पंद्रह प्रतिशत पालक मानते हैं कि ऑनलाइन पढ़ाई के दौरान बच्चों की फ़िज़िकल फ़िटनेस कम हुई।

ऑनलाइन शिक्षा पर अभिभावकों के मत

- ऑनलाइन शिक्षा में नियमित पढ़ाई के लिए स्मार्ट मोबाइल फ़ोन की अतिरिक्त व्यवस्था, डेटा, निर्बाध इंटरनेट कवरेज, इंटरनेट स्पीड, बैटरी चार्जिंग के लिए बिजली की आवश्यकता आदि समस्याओं तथा घर में पढ़ने के लिए नियमित रूप से सुरक्षित शांत जगह की व्यवस्था न होने का सामना करना पड़ रहा है।

निष्कर्ष

- वर्तमान कोविड-19 काल में विद्यालयी शिक्षा की वस्तुस्थिति के बारे में दूरभाष चर्चा से प्राप्त बच्चों, पालकों एवं अध्यापकों का अभिमत तथा अन्य माध्यमों से प्राप्त अवलोकन बताते हैं कि वर्तमान स्थिति में अध्यापकों द्वारा अभिभावकों एवं बच्चों से समन्वय कर कोविड-19 के दिशानिर्देशानुसार पढ़ाई को जारी रखा गया है। कोरोना संक्रमण के कारण परिवहन के साधन बंद होने से दूरस्थ अंचल, वन ग्राम व ग्रामीण क्षेत्रों में बच्चों की अकादमिक गतिविधियाँ नगण्य हैं।
- वर्तमान कोविड-19 काल में ऑनलाइन माध्यम के महत्व को नकारा नहीं जा सकता है। इससे बच्चों को शिक्षा की धारा से जोड़े रखने के भरसक प्रयास किए जा रहे हैं। अल्मोड़ा, उत्तराखंड से प्रकाशित *बालप्रहरी* त्रैमासिक पत्रिका द्वारा आयोजित परिचर्चा में देश के विभिन्न राज्यों के अधिकतर बच्चों ने कोविड-19 महामारी से बचाव के लिए ऑनलाइन शिक्षा को एक ज़रूरी विकल्प बताया है।
- ऑनलाइन माध्यम से अकादमिक गतिविधियों के संचालन हेतु शासन स्तर पर अनेक प्रयास किए गए। अध्यापकों एवं शिक्षा के प्रति रुचि रखने वाले पालकों ने भी उसमें निरंतर सहयोग प्रदान किया। गैर-सरकारी संगठनों द्वारा भी सकारात्मक पहल की गई।
- ऑनलाइन माध्यम से अकादमिक गतिविधियों में विद्यार्थियों की सहभागिता औसतन से कम हुई है। वास्तविक नियमित कक्षाओं की पढ़ाई से मार्गदर्शन प्राप्त न हो पाने से केवल औपचारिक स्थिति बन गई है, विशेषकर कक्षा पहली व दूसरी के बच्चों की लेखन कौशल गतिविधियाँ चिंताजनक हैं। इसी तरह प्राथमिक कक्षाओं में भाषाई कौशलों एवं गणित की मूलभूत दक्षताओं के विकास की स्थिति भी चिंताजनक है।
- वर्तमान कोविड-19 काल में ऑनलाइन माध्यम से अकादमिक गतिविधियों के संचालन में अनेक कठिनाइयाँ आ रही हैं। जिनमें अध्यापकों तथा विद्यार्थियों में मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य संबंधी परेशानियाँ प्रमुख हैं। पालकों को आर्थिक कठिनाइयों से जूझना पड़ रहा है। बच्चों की शैक्षिक के अलावा सहशैक्षिक गतिविधियाँ बंद होने से वे भी परेशान हैं।
- निष्कर्षतः कोविड-19 काल से उत्पन्न हुई कठिनाइयों का सामना करने के लिए विद्यालयों एवं अध्यापकों को तैयार रहना होगा। शिक्षा नीतिकारों को भी अब विद्यालयी शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए व्यापक तरीके से सोचना होगा। बच्चों के स्वास्थ्य की ज़िम्मेदारी अध्यापकों के साथ-साथ, परिवार और समाज की भी है।

सुझाव

- शत-प्रतिशत विद्यार्थियों का कोरोना वायरस प्रतिरोधी टीकाकरण शीघ्रातिशीघ्र सुनिश्चित

किया जाए। कोविड-19 का दौर जब तक पूरी तरह से नियंत्रित नहीं हो जाता, तब तक समस्त अकादमिक गतिविधियों से संबंधित क्रियाकलापों हेतु निर्देशत कोविड-19 नियमों का कड़ाई से अनुपालन सुनिश्चित हो।

- बच्चों के लिए ऑनलाइन कक्षाओं के पूर्व, के दौरान एवं के बाद चिकित्सक की सलाह अनिवार्य कर देनी चाहिए तथा इसकी उचित व्यवस्था भी की जानी चाहिए।
- प्रधानाचार्य या प्रशासन द्वारा पाठ्यक्रम पूरा करने पर ज़ोर न देकर केवल महत्वपूर्ण विषय-वस्तु के अध्ययन या अध्यापन पर ज़ोर देना चाहिए।
- विद्यालय बंद होने से विद्यार्थी नियमित एवं वास्तविक कक्षाओं की पढ़ाई से दूर हो गए हैं। साथ ही, बच्चे अगली कक्षाओं में प्रोन्नत भी किए जा रहे हैं। इसलिए उन पर अगली कक्षाओं का दबाव भी बढ़ जाएगा।
- विद्यालय के फ़ेस-टू-फ़ेस अधिगम का कोई विकल्प नहीं है। कोरोना-19 महामारी से हालात सुधरने पर अगली कक्षाओं के लिए तीन-तीन महीने के ब्रीज कोर्स कराए जाएँ।
- आज लगभग सभी परिवारों के पास एक फ़ोन आवश्यक है, भले ही वह स्मार्टफ़ोन न हो। जिन लोगों के पास स्मार्टफ़ोन नहीं है, उन बच्चों से संपर्क करने के लिए हम वॉइस कॉल द्वारा विभिन्न आसान सुझाव तथा टेक्स्ट मैसेज के माध्यम से कक्षा कार्य के बारे में बता सकते हैं।
- सरकार बच्चों को मुफ़्त डेटा पैक प्रदान कर सकती है, क्योंकि गरीब परिवार के लोग नियमित रूप से महंगे डेटा पैक नहीं खरीद सकते हैं। यह हमें व्हाट्सएप के माध्यम से कई बच्चों से संपर्क करने में मदद करेगा।
- कोविड-19 संकट में सभी अध्यापक, अभिभावक व विद्यार्थी अपनी कक्षा के अनुसार, अपनी आवश्यकता के अनुसार *पीएम ई-विद्या चैनल, दीक्षा पोर्टल, ई-पाठशाला, निष्ठा*, एन.आर.ओ.ई.आर. की वेबसाइट पर उपलब्ध ई-संसाधन तथा रा.शै.अ.प्र.प., राज्य शिक्षा केंद्र आदि संस्थानों द्वारा उनकी वेबसाइट पर अपलोड ऑनलाइन अध्ययन सामग्री का उपयोग कर सकते हैं।
- कोविड-19 काल के चलते खंडवा ज़िले में स्थानीय स्तर पर अध्यापकों के साथ मिलकर उच्च शिक्षित लड़कियों द्वारा बालिकाओं की प्रारंभिक शिक्षा हेतु सकारात्मक पहल, खालवा विकासखंड में न्यू एजुकेशन ग्रुप (एन.ई.जी.) द्वारा प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों के लिए भाषा की मूलभूत दक्षता गतिविधि करवाने के प्रयास किए जा रहे हैं। इसी तरह गैर-शासकीय संस्थाओं या संगठनों को अपनी सेवाओं का विस्तार करते हुए ग्रामीण क्षेत्रों तक बढ़ाना चाहिए।

संदर्भ

अकादमिक गतिविधियाँ मध्य प्रदेश राज्य शिक्षा केंद्र, भोपाल के निर्देश. राज्य शिक्षा केंद्र द्वारा जारी किया गया सर्कुलर . (http://www.educationportal.mp.gov.in/portal)

अप्रैल से 15 अप्रेल हेतु निर्देशिका. डिपार्टमेंट ऑफ स्कूल एजुकेशन, मध्य प्रदेश केंद्र.

मध्य प्रदेश राज्य शिक्षा केंद्र, भोपाल कोविड-19 सुरक्षा के निर्देश. राज्य शिक्षा केंद्र द्वारा जारी किया गया सर्कुलर (https://www.educationportal.mp.gov.in/portal)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 अनुसार "द डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर फ़ॉर नॉलेज शेयरिंग" (दीक्षा)17 रा.शै.अ.प्र.प. संस्थान द्वारा अपलोड ऑनलाइन सामग्री https://ncert.nic.in/

विद्यार्थियों की नज़र से — ज्ञान विज्ञान बुलेटिन. "ऑनलाइन पढ़ाई पर बच्चों के विचार" पर 9 अक्तूबर 2020 को *बालप्रहरी* पत्रिका द्वारा आयोजित परिचर्चा. अल्मोड़ा, उत्तराखंड.

साइको-लिंग्विस्टिक एसोसिएशन ऑफ़ इंडिया. 2014. *साइको-लिंग्वा*. 44(1), पृष्ठ संख्या 5–9.